सावधानियॉ-

- टांके को धूप तथा वर्षा के बचाव हेतु अस्थायी छप्पर से ढंक दें।
- कम्पोस्टिंग प्रकिया के दौरान गड्ढे को न छेड़े तथा दरारों को पानी द्वारा बंद करें। पोषक तत्व वृद्धि के लिये मिट्टी की परत के पहले जिप्सम या राक फास्फेट या सिंगल सुपर फास्फेट की बारीक परत लगायें।

पोषक तत्वों की मात्रा

नापेड कम्पोस्ट में पोषक तत्वों की मात्रा उपयोग में लायी गयी सामग्री की गुणवत्त पर निर्भर करती है। सामान्यतः नापेड कम्पोस्ट में पोषक तत्वों की मात्रा निम्नानुसार पायी जाती है।

क्र.	पोषक तत्व	मात्रा
1.	नाइट्रोजन	0.8 – 1.4 प्रतिशत
2.	फस्फोरस	1.0 –1.5 प्रतिशत
3.	पोटाश	1.2 –1.4 प्रतिशत

इस के साथ साथ सल्फर, लोह, जिंक, मैगानीज, ताबा, बोरान पोषक तत्वों की उपलब्धता भी होती है।

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, CRDE
सेविनिया, जिला सीहोर (म.प्र.)
फोन - 07561-211834, ई-मेल- crdekvksehore@gmail.com

टोल फ्री नं. 1800 1801551

कम गोबर से बेहतर कम्पोस्ट बनाने की तकनीक

नाडेप कम्पोस्ट

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, CRDE
सेविनिया, जिला सीहोर (म.प्र.)

Healthy Soils for a Healthy Life

नाडेप कम्पोस्ट

नाडेप विधि के शेधकर्ता महाराट्र राज्य के यवतमाल जिले के कृषक श्री नारायण राव देवराज पांडरी पाडे है। इसलिये इस विधि से तैयार खाद को नाडेप कम्पोस्ट का नाम दिया गया है। यह विधि वनस्पतिक कचरे और गोबर से शीघ्र खाद बनाने की आदर्श विधि है। ग्रामीण स्वच्छता और प्रदुषण मुक्त वातावरण की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है।

(अ) टांका (होज) का नाप एवं निर्माण विधि

जमीन के उपर जहां पानी इकट्ठा नहीं होता हो, वहां 12 फिट लम्बा, 5 फिट चौड़ा तथा 3 फिट गहरा आयताकार पक्का ढांचा (हौज/टांका) तैयार किया जाता है। दीवार की मोटाई 9 इंच से 12 इंच रखी जाती है तथा उसमें हवा के आने जाने के लिए प्रत्येक दीवार में लंबाई की तरफ 7–8 तथा चौड़ाई की तरफ 4–5 छिद्र रखे जाते हैं। ढांचे का फर्श भी ईंटों/पत्थर द्वारा पक्का बनाया जाता है तथा दीवारों व फर्श को सीमेन्ट द्वारा पक्का प्लास्टर किया जाता है। जिससे पोषक तत्व जमीन में/दीवारों से रिसकर नष्ट न हो।

(ब) टांका भरने हेतु आवश्यक सामग्री

1. खेतों के अनावश्यक कार्बनिक पदार्थ खरपतवार, फसल अवशेष, सूखी पत्तियां, बचा चारा इत्यादि	–	1500–2000 कि.ग्रा.
2. कच्चा गोबर	–	90–100 कि.ग्रा.
3. सूखी छनी खेत की बारीक मिट्टी	–	1500 कि. ग्रा.
4. पानी	–	200 – 1500 लीटर

(स) टांका भरने की विधिः-

- पहले गोबर (8–10 कि. ग्रा.) को 100–125 लीटर पानी में घोल बनाकर टांके के अंदर की दीवारों व फर्श पर छिड़कें।
- पहली परत 15 से.मी. फसल अवशेषो की बनायें।
- दूसरी परत 4–6 कि. ग्रा. गोबर को 125–150 लीटर पानी में घोलकर पहली परत पर इस प्रकार छिड़के की पहली परत पूरी तरह से भीग जायें।
- तीसरी परत छनी हुई बारीक खेत की मिट्टी को लगभग एक इंच मोटी परत (60–70 कि. ग्रा.) दूसरी परत के ऊपर लगा देते हैं तथा पानी छिड़क कर गीला कर देते हैं।
- इसी कम में टांके को भरते चले जाते हैं तथा टांके की सतह के ऊपर एक डेढ़ फीट ऊँचाई तक झोपड़ी की तरह ढलवा आकृति बनायी जाती है।
- ढलवा आकृति पर 5–7 से.मी. मोटी परत बारीक मिट्टी की बिछाते हैं तथा मिट्टी – गोबर के मिश्रण का लेप लगाकर टांके को सील कर देते हैं।

पहली भराई के 15–20 दिन बाद जब गड्ढा बैठ जाये तब पहले के कमानुसार 1.5 फिट ऊँचाई तक परत दोबारा लगाते हैं तथा मिट्टी – गोबर से पहले की भांति लेपकर बंद कर देना चाहिए। 110–120 दिनों में खाद/पदार्थ सड़कर तैयार (भूरेरंग का)हो जाता है। इस विधि द्वारा एक गड्ढे से लगभग 12–15 का कम्पोस्ट खाद प्रतिवर्ष तैयार की जा सकता है।